श्री गणेशाय नम

→ हिन्दी शब्द फारसी / ईरानी या अवेस्ता भाषा का शब्द है। हिन्दी शब्द का निर्माण सिंधी शब्द से बना है। और सिंधी शब्द सिन्धु शब्द से बना है।

जिसका अर्थ होता है — समुद्र

→★ हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा बनाने का श्रेय

→★ :- गोपाल स्वामी आयंगर

दर्जा :— को राजभाषा 14 Sep. को 1949 तथा रूप में 26 Jan 1950 लागू किया गया इसलिए प्रतिवर्ष 14 Sep को हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं।

विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है।

★ संविधान की 8 वी अनुसूची के भाग 17 के अध्याय एक के अनुच्छेद 343 (क) में लिखा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी होगी लिपि देवनागरी है।

व्याकरण

देवनागरी :— नामकरण का आधार :—

★ देवनागरी देववाणी संस्कृत की लिपि होने के कारण यह लिपि देवनागरी कहलाई।

★ इस लिपि का संबंध देवनगर काशी से माना जाता है। इसलिए यह देवनागरी कहलाई।

★ इस लिपि का सर्वाधिक प्रचार - प्रसार गुजरात के नागर व ब्राह्मणों के द्वारा किया गया इसलिए यह लिपि देवनागरी कहलाई।

★ देवनागरी लिपि की विशे:—

★ यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
★ इस लिपि में वर्णों का उच्चारण स्थान निश्चित है।
★ इस लिपि का व्याकरण वैज्ञानिक है।
★ इस लिपि को भारत की राष्ट्रलिपि भी कहा जाता है।

वर्ण विचार

वर्णों का अध्ययन करना वर्ण विचार कहलाता है।

★ वर्ण शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसका सर्वप्रथम प्रयोग महर्षि पाणिनी ने अपने ग्रन्थ अष्टाध्याय अपने गुरु उपवर्ष की

सहायता से किया।

★ Time – 500 ई.पू.   ★ Place – लाहौर

★ वर्ण की परिभाषा :—

① भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।
② तथा ध्वनि का लिखित रूप ही वर्ण कहलाता है।
③ भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई को ध्वनि कहते हैं। और ध्वनि को लिखित रूप वर्ण कहलाता है।
④ भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई को वर्ण कहते हैं।

★ वर्णों के दो भेद होते हैं।
① स्वर
② व्यञ्जन

① स्वर – 11
② व्यञ्जन – 33
③ उत्क्षिप्त – 2
④ अयोगवाह – 2
⑤ संयुक्त वर्ण – 4

★ कुल वर्ण → 52

★ स्वर :– वे वर्ण जो स्वतः उच्चारित होता है। वह स्वर कहलाते हैं।

* वह वर्ण जिनके उच्चारण मे कोई बाधा, रुकावट, अवरोध नही आता स्वर कहलाते है।

* वह वर्ण जिनका उच्चारण स्वतन्त्र रूप से होता है।

* वे वर्ण जो पूर्ण व स्वतन्त्र होते है स्वर कहलाते है।

* स्वर संख्या में 11 होते है।
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

* हिन्दी प्रत्येक स्वर की मात्रा लगती है। हिन्दी मे मात्रो की संख्या 10 होती है।

* भोलानाथतिवारी के अनुसार स्वरो की संख्या 10 मानी गई है।

* क्योकि भोलानाथतिवारी (ऋ) को स्वर नही मानते क्योकि ऋ, रि का उच्चारण एक समान होता है।

* स्वरो के भेद :-
i) ह्रस्व स्वर
ii) दीर्घ स्वर

i) ह्रस्व स्वर :- वे वर्ण जिनके उच्चारण मे बहुत कम समय लगता है। वह ह्रस्व स्वर कहलाते है।

* इन स्वर को मूल स्वर, प्राथमिक स्वर, छोटे स्वर, लघु स्वर, एकमात्रिक स्वर भी कहते है।

* इनकी संख्या 4 होती है।
अ, इ, उ, ऋ

ii) दिर्घ स्वर :- वे वर्ण जिनके उच्चारण मे ह्रस्व स्वरो से दो गुना समय लगता है। दीर्घ स्वर कहलाता है।

* इन स्वरो को बड़े स्वर, गुरू स्वर, द्विमात्रिक स्वर, दितियक स्वर भी कहते हैं।

* इनकी संख्या 7 होती है।

* व्यंजन ⇒ व्यञ्जन शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है।
* व्यञ्जन शब्द का सर्वप्रथम महर्षि पंतजली ने अपने ग्रन्थ महाभाष्य में किया।

परिभाषा :-
1. वे वर्ण जो स्वरो की सहायता से उच्चारित होते है।
2. वे वर्ण जिनके उच्चारण में कोई बाधा, रुकावट, या अवरोध आता है। वह व्यञ्जन कहलाते है।
3. वे वर्ण जो परतंत्र, अपूर्ण व आश्रित होते है। वह व्यञ्जन कहलाते है।

* व्यञ्जन संख्या में 33 होते है। जिन्हे तीन भागो मे बाटा गया है।
1. स्पर्श / वर्गीय व्यञ्जन :- वे वर्ण जिनके उच्चारण में हमारी जिव्हा (जीभ) किसी निश्चित स्थान पर जाकर स्पर्श करती है। इसलिए इन्हे स्पर्श व्यञ्जन कहते है।

★ स्पर्श व्यञ्जन की संख्या 25 होती है।

क् ख् ग् घ् ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्

2) अन्तस्थ व्यञ्जन :— वे व्यञ्जन जिनके उच्चारण में हमारी जिह्वा किसी निश्चित स्थान को स्पर्श नहीं करती है। इसलिए इन्हें अन्तस्थ व्यञ्जन कहते हैं।

★ इन व्यञ्जनों की संख्या 4 होती है।
य, र, ल, व

3) ऊष्म व्यञ्जन :— वे वर्ण जिनके उच्चारण में हमारे मुख से गर्म ऊष्मा बाहर निकलती है। ऐसे व्यञ्जन ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं।

★ इनकी संख्या 4 होती है।
श, ष, स, ह

4) उत्क्षिप्त वर्ण :— वे वर्ण जिनके उच्चारण में जीभ या जिह्वा झटके के साथ नीचे से ऊपर जाती है। वह ऊपर से नीचे आती है। ऐसे वर्ण उत्क्षिप्त वर्ण कहलाते हैं।

★ इन वर्णों की संख्या 2 होती है।
ड़, ढ़

★ इन वर्णों का प्रयोग सदैव शब्द के मध्य या अन्त में होगा। प्रारम्भ में यह कभी नही आते है जैसे - सड़क, पढ़ाई,

★ इन वर्णों का प्रयोग हिन्दी भाषा में किया जाता है। अन्य किसी भाषा में नही जैसे मेडम

5) **अयोगवाह वर्ण :-** वे वर्ण जिनको न स्वरों में गीना जाता है। या न व्यंजनों में ऐसे वर्णों को अयोगवाह वर्ण कहते है।

★ इन वर्णों का निश्चित आकार नही होता इसलिए पण्डित कामताप्रसाद गुरु ने इन्हे निराकार वर्ण कहाँ है।

★ इनकी संख्या 2 होती है।

Note NCERT के अनुसार वर्तमान में अयोगवाह वर्णों की संख्या 3 है।

1. अनुस्वार (ं) → मंच, कंचन
2. अनुनासिक (ँ) → चाँद, आँवला
3. विसर्ग (ः) → प्रातः, मनः

6) **संयुक्त वर्ण :-** वे वर्ण जिनका निर्माण दो या दो से अधिक भिन्न व्यंजनों के योग से होता है। ऐसे संयुक्त वर्ण कहते है।

★ इनकी संख्या 4 होती है।

1. क्ष → क् + ष
2. ज्ञ → ज + ञ
3. त्र → त् + र
4. श्र → श् + र

शब्द विचार

परिभाषा :- शब्दो का अध्ययन करना हि शब्द विचार कहलाता है।

★ शब्द परिभाषा :-

① वर्णो का सार्थक समूह शब्द कहलाता है।
② अर्थ की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते है।
③ संरचना की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते है।
④ जब शब्द का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से होता है। तब वह शब्द कहलाता है। तथा जब शब्द का प्रयोग वाक्य मे होता है। तो उसे पद कहते है।

शब्द विचार

↓

शब्दो का अध्ययन

↓

वर्गीकरण

- रूप परिवर्तन / प्रयोग के आधार पर
  - विकारी
    - ① संज्ञा
    - ② सर्वनाम
    - ③ विशेषण
    - ④ क्रिया
  - अविकारी
    - ① क्रिया विशेषण →
      - ① रीतिवाचक
      - ② कालवाचक
      - ③ स्थानवाचक
      - ④ परिमाणवाचक
    - ② समुच्चयबोधक
    - ③ सम्बन्धबोधक
    - ④ विस्मयादिबोधक
- उत्पत्ति के आधार पर
  - तत्सम
  - तद्भव
  - देशज
  - विदेशज
  - संकर
- व्युत्पत्ति / बनावट / रचना / निर्माण के आधार
  - रूढ़
  - यौगिक
  - योगरूढ़
- अर्थ के आधार
  - ① सार्थक
  - ② निरर्थक

Neelkamal

★ रूप परिवर्तन के आधार पर शब्द के भेद

→ रूप परिवर्तन के आधार पर शब्द के 2 भेद होते है।

① विकारी
② अविकारी

① विकारी शब्द :- वे शब्द जो लिंग, वचन, काल व कारक के आधार पर बदल जाते है। वे विकारी शब्द कहलाते है।

② अविकारी शब्द :- वे शब्द जो परिवर्तनशील होते है। अविकारी शब्द कहलाते है।

→ विकारी शब्दो के दो भेद होते है।

① संज्ञा
② सर्वनाम
③ विशेषण
④ क्रिया

संज्ञा

→ किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम को संज्ञा कहते है।

जैसे – लड़का, बालक, बुनपा, पुस्तक, जयपुर

→ संज्ञा के तीन भेद होते है

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ii) जातिवाचक संज्ञा
(iii) भाववाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक :— किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं

जैसे:— राम रामायण अपोस्पा

rules —

① राज्य, गाँव, शहर, देश के नाम
↓ ↓ ↓
बारां कोटा भारत

② सागर, महासागर, महाद्वीप के नाम
↓ ↓ ↓
अरब सागर, लाल सागर — हिन्द महासागर, अंटार्कटिक महासागर

③ कुआ, तालाब, बावड़ी, झरना, तथा खाड़ी के नाम
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
भराडू का कुआ — रामसर तालाब — चाँद बावड़ी — seven wonder water park — बंगाल की खाड़ी

④ दिन, महिने, त्योहारों के नाम
↓ ↓ ↓
शुक्रवार चैत्र गणगौर

⑤ पशु-पक्षियों की विशेष-नस्लों के नाम → थार-पारकर गाय, मुर्गा भैंस, जाफरानी, पिवणा साँप

⑥ पुरस्कारों के नाम → पदम भूषण, पदमविभूषण, भारत रत्न

⑧ किले, दुर्ग, महलों के नाम → लाल किला, रणथम्भौर दुर्ग, हवामहल

शब्द + व्यक्ति ⇒ विशेषण जमे गो आलसी + व्यक्ति
नदी ⇒ सज्ञा

(7) देवी - देवताओ के नाम → सरस्वती देवी, ब्रह्माजी
(8) कवि व उनकी रचनाओ के नाम → प्रेमचन्द्
(9) जो दुनिया में एक हो व व्यक्तिवाचक सज्ञा मानी जाती है
→ आकाश, पाताल, सूर्य, चन्द्रमा

(2) **जातिवाचक संज्ञा :—**

* किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान की जाति के नाम को जातिवाचक संज्ञा कहते है।

जैसे — लड़का, पुस्तक, शहर, अध्यापक, पशु - पक्षी, आदि।

→ जातिवाचक संज्ञा को दो उपभेद में बाटाँ गया है।

(1) द्रव्यवाचक / परिमाणवाचक → इस संज्ञा के अन्तरगत नाप तोल से सम्बिधित वस्तुए आती है।

जैसे — दुध, दही, घी, जल, हवा, पैट्रोल, डीजल, कपडा।

(2) समूह / समुदाय वाचक :— इस संज्ञा के अन्तर्गत समूह का बोध कराने वाले शब्द आते है।

जैसे — कक्षा, परिषद, विधानसभा, पार्टी, पुलिस, जत्था → (दल), फौज

(3) **भाववाचक संज्ञा :—**

→ इस संज्ञा के अर्न्तगत ऐसे शब्द आते है। जो भावनात्मक होते है। इन ~~सब~~ शब्दो को महसूस किया जाता है। यह अदृश्य होती है।

जैसे → दया, प्रेम, घृणा, नफरत, क्रोध, लाल, हानि सवार्थ, लालच आदि।

संज्ञा परिवर्तन

① → यदि ~~व्यक्ति~~ व्यक्तिवाचक संज्ञा के शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए नही होकर ~~बहु~~ बहुवचन के अर्थ में ~~ब होकर~~ होता है। तो वह शब्द जाति वाचक संज्ञा का माना जाता है।

→ जैसे :– रावण लंका का राजा था
रावण – व्यक्तिवाचक संज्ञा

→ संसार में ~~बहुत~~ रावणो की कमी नही है।
रावणो – जातिवाचक संज्ञा

② समाज में अनेक हरिशचन्द्र है।
हरिशचन्द्र – जातिवाचक

③ विद्यार्थी जीवन मे कुमकरणो की कमी नही है।
कुमकरणो – जातिवाचक

→ यदि किसी एक व्यक्ति की तुलना दुसरे व्यक्ति के नाम से होती है। तो वहाँ उस दुसरे नाम में जातिवाचक संज्ञा होती है।

① रीना हमारे घर की लक्ष्मी है।
रीना – व्यक्ति॰, लक्ष्मी – जाति॰

② सुरेश हमारे शहर का अमरीशपुरी है।
सुरेश – व्यक्तिवाचक, अमरीशपुरी – जा॰

③ महेन्द्र हमारे शहर का शक्तीकपूर है।
महेन्द्र – व्य॰, शक्तीकपूर – जा

Note
③ यदि किसी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए होता है। तो वह शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

जैसे – ① हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।
(कामना – भाव॰)

② कामना कक्षा दसवीं में पढ़ती है।
(कामना – व्यक्तिवाचक)

③ प्रेम इस बार फेल हो गया।
(प्रेम – व्यक्तिवाचक)

Note
④ यदि किसी भी शब्द का प्रयोग बहुवचन के अर्थ में होता है। तो वह शब्द जातिवाचक संज्ञा का माना जाता है।

→ ① सुख (भाव॰) — सुखो (जाति)   ② कामना (भाव) → कामनाएँ (जाति)

सर्वनाम

→ संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द ~~संज्ञा~~ सर्वनाम कहलाते है।

जैसे:— राम विद्यालय जाता है। और वह गणित पढ़ता है।

→ सर्वनाम की विशेषताएँ :—

1. सर्वनाम संज्ञा के दोहराव को रोकते है
2. सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य सरल व सहज हो जाता है।
3. भाषा में संक्षिप्तता (छोटा रूप) का सुन्दरता व पुनरावृति दोष से बचने के लिए सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
4. सर्वनाम को संज्ञा का प्रतिनिधि शब्द भी कहा जाता है।

→ हिन्दी में कुल 11 सर्वनाम होते है। जिन्हे मौलिक सर्वनाम के नाम से भी जाना जाता है। वह निम्न है।

→ मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या

→ सर्वनाम के भेद :—

→ एक पुरुष निज प्रश्न के सम्बन्ध में निश्चय व अनिश्चय में फंस गया

- पुरुष → पुरुषवाचक
- निज → निजवाचक
- प्रश्न → प्रश्नवाचक
- सम्बन्ध → सम्बन्धवाचक
- निश्चय → निश्चयवाचक
- अनिश्चय → अनिश्चयवाचक

1) **पुरुषवाचक सर्वनाम** :— वे सर्वनाम जिनका प्रयोग स्त्री या पुरुष की जाति के नाम के स्थान पर होता है। वहाँ पुरुषवाचक सर्वनाम होता है

जैसे → राम बहुत चालाक है। और वह इमानदार है।

→ राधा खाना खाती है। और वह जल्दी सो जाती है।

→ पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है।

(1) उत्तम / प्रथम पु० — (वक्ता, श्रोता - स्वयं) → वक्ता → मैं, हम

मध्यम पुरुष / द्वितिय पु० → श्रोता → तू, आप

अन्य पु / तृतीय पु० → अन्य → यह / वह → ये / वे

2) **निजवाचक सर्वनाम** :— वे सर्वनाम जिनका प्रयोग कर्ता स्वयं अपने लिए करता वह सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम कहलाते है। (स्वयं, आप, अपने, आप)

जैसे → मैं निज आवास मे रहता है।

→ वह खुद ही सो जाता है।

→ महेश स्वयं पढ़ लेता है।

→ राधा स्वयंपाठी विद्यार्थी है।

→

3) प्रश्नवाचक सर्वनाम — वे सर्वनाम जो प्रश्न के भाव का बोध कराते है। वह प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते है। (कौन, क्या, किस)

जैसे → हम आपके है। कौन ?

→ कौन है जो सपना आया ?

→ किस ने मेरी निंद चुराई है ?

→ किसी ने मेरा दिल चुराया है

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

4) सम्बन्ध वाचकसर्वनाम — वे सर्वनाम जो सम्बन्ध बताने का कार्य करते है। वह सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहलाते है। (जो, सो)

जैसे → जहाँ मैं जाता हूँ वही चले आते हो

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जैसी करनी वैसी भरनी

तेते पाँव पसारिए जैसे लांबी सौर

5) निश्चय वाचक सर्वनाम :—

↳ निश्चित + व्यक्ति / वस्तु / स्थान] – संकेत वाचक (यह, वह)

निकट – ① यह / वह + मैं हम + वि॰
② यह / वह + संज्ञा + वि॰
↓
दूर

① यह हमारा घर है। → निश्चय
② यह घर हमारा है। → सार्वनामिक

~~विशेषण~~

6) **निश्चय वाचक सर्वनाम** :— इन सर्वनामों का प्रयोग निश्चय व्यक्ति, वस्तु, स्थान का बोध कराने के लिए किया जाता है। (यह, वह)
→ इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।
→ यह, वह के रूप इसमें आते हैं।

जैसे – यह मेरी गाय है।
वह हमारा घर है।

7) **अनिश्चय वाचक सर्वनाम** :— इन सर्वनामों का प्रयोग अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु व स्थान का बोध कराने के लिए किया जाता है।
(कुछ, कोई, किसी ने)

जैसे – किसी ने मेरा दिल चुराया है।
कोई लड़की है। जब वह हसती है। तो बारिश होती है।

विशेषण (Adjective)

→ विशेषण का शाब्दिक अर्थ विशेषता होता है।

→ संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते है।

जैसे — महेश एकदम पागल है। और वह चोर है।

महेश → संज्ञा (विशेष्य); पागल → विशेषण; वह → सर्वनाम (विशेष्य)

विशेष्य :— जिसकी विशेषता बताई जाती है। उसे विशेष्य कहते है। अर्थात संज्ञा व सर्वनाम ही विशेष्य कहलाते है।

प्रविशेषण :— विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते है।

जैसे — पिंकि सबसे (बिल्कुल) सीधी लड़की है।

श्याम बहुत चालाक है।

विशेषण के भेद

- प्रयोग के आधार पर
  - उद्देश्य
  - विधेय
- अर्थ के आधार पर
  - गुणवाचक
  - संख्यावाचक
  - परिमाण वाचक
  - सार्वनामिक
  - व्यक्तिवाचक
- अवस्था / तुलना के आधार पर
  - प्रथमावस्था / मूलावस्था
  - द्वितीयावस्था / उत्तरावस्था
  - ③ तृतीयावस्था / उत्तमावस्था

→ विशेषण के निम्न भेद होते हैं।

① प्रयोग के आधार पर :— प्रयोग के आधार पर विशेषण के दो भेद होते हैं (i) उद्देश्य विशेषण (ii) विधेय विशेषण।

1) उद्देश्य विशेषण | जिस वाक्य में विशेषण पहले और विशेष्य बाद में आता है। वह उद्देश्य विशेषण होता है।

जैसे — बुद्धिमान बालक कभी असफल नहीं होते।

रावण एक महान राजा था

2) विधेय विशेषण :— जिस वाक्य में ~~विशेषण~~ विशेष्य पहले व विशेषण बाद में आता है। वह विधेय विशेषण होता है

जैसे श्याम सुन्दर व चालाक है।

रावण एक राजा महान था।

→ अर्थ के आधार पर विशेषण के भेद :—

→ अर्थ के आधार पर विशेषण के मुख्यतः 4 भेद होते हैं।

(1) गुणवाचक विशेषण :— वे शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान की गुण संबंधी विशेषता प्रकट करते हैं। गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे — आधुनिक भारत में सभी सुख सुविधाएं हैं।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को मन से सुन्दर होना चाहिए।
(3) संगमरमर चिकना पत्थर होता है।
(4) आज वह महिला नही आई जिसकी साड़ी फटी हुई है।
(5) आँखो के लिए हरा रंग अच्छा होता है।
(6) गर्म चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(7) बूढ़ी औरते सड़क पार नही कर पा रही है। स्पर्शबोधक (गुणवाचक)

(2) **संख्यावाचक विशेषण :-** वे विशेषण जो संख्यावाची विशेषता बताते है। वह संख्यावाची विशेषण कहलाते है।

→ संख्यावाची विशेषण के दो भेद होते है।

(i) निश्चेत वाची विशेषण
↓
2 लोग
10 पुस्तके

(ii) अनिश्चेतवाची विशेषण
↓
कुछ लोग
कुछ पुस्तके

3) **परिमाणवाचक / परिमाणवाची :-** वे विशेषण जो नाप-तोल संबंधी विशेषता बताते है। परिमाणवाची विशेषण कहलाते है।

→ यह दो प्रकार के होते है।

(1) **निश्चेत परिमाणवाचक :-** 10 किलो प्याज, दो मीटर कपड़ा, दो किलो चावल

(2) **अनीश्चेत परिमाणवाचक :-** कुछ प्याज, थोड़ा कपड़ा, मुट्ठीभर चावल

4) सार्वनामिक विशेषण :— वे सर्वनाम जो संज्ञा से पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का कार्य करते है। वह सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।

→ कोई लड़की मेरे लिए पागल हुए जा रही है।
अनिश्चित विशेषण

→ कुछ लड़के बहुत नालायक प्रवृति के होते है।
सार्वनामिक — *गुणवाचक

→ संज्ञा से पहले प्रयुक्त होने वाले शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।

→ वह लड़की बहुत चालाक है।

5) व्यक्तिबोधक विशेषण :— वे विशेषण जो स्थान संबधी विशेषता बताते है। वह व्यक्तिवाची विशेषण कहते है।

→ जयपुरी रजाई ओढ़ने पर बहुत अच्छा लगता है।
→ बीकानेरी भुजिया खाने में बहुत स्वादिष्ट लगते है।
→ एक लड़के ने जोधपुरी साफा पहन रखा था जो बहुत सुन्दर लग रहा था।
→ राजस्थानी लड़की बहुत खुबसूरत नृत्य करती है।

NOTE — यदि विकल्प में व्यक्तिबोधक विशेषण न हो तो ऐसी स्थिति में गुणवाचक विशेषण सही माना जाएगा।

(3) अवस्था / तुलना के आधार पर →

→ इस आधार पर विशेषण के तीन भेद होते है।

(1) प्रथमावस्था / मूलावस्था
(2) द्वितीयावस्था / उत्तरावस्था
(3) तृतीयावस्था / उत्तमावस्था

(1) प्रथमावस्था / मूलावस्था :- इसमे किसी वस्तु व व्यक्ति की सामान्य विशेषता बताई जाएगी वह प्रथमावस्था कहलाएँगी।

जैसे - प्रिय, श्रेष्ठ।

(2) द्वितीयावस्था / उत्तरावस्था :- इसमे दो व्यक्ति व वस्तुओ की तुलना कर के किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाएगा।

इस अवस्था मे (तर) प्रत्यय जोड़ा जाता है।

जैसे- प्रियतर, श्रेष्ठतर, सुन्दरतर।

(3) तृतीयावस्था / उत्तमावस्था :- इस अवस्था में दो से अधिक व्यक्तियों व वस्तुओ की तुलना कर के किसी एक को सबसे श्रेष्ठ बताया जाता है।

इस अवस्था मे (तम) प्रत्यय जोड़ा जाता है।

जैसे - प्रियतम, श्रेष्ठतम, सुन्दरतम।

वाक्य विचार

→ शब्दो के सार्थक समूह को वाक्य कहते है।
→ पूर्ण अभिव्यक्ति की दृष्टि से भाषा की सबसे छोटी इकाई को वाक्य कहते है।
→ जब शब्द का प्रयोग वाक्य में होता है। तो उसे पद कहा जाता है। तथा पदो के सार्थक समूह को वाक्य कहते है।

→ **वाक्य के अंग**

→ वाक्य के दो अंग होते है।
① उद्देश्य ② विधेय

① **उद्देश्य** :- वाक्य में जिसके लिए कहा जाता है। वह उद्देश्य कहलाता है। अर्थात वाक्य में कर्ता हि उद्देश्य होता है।

जैसे:- बालक पुस्तक पढ़ता है।
(बालक — उद्देश्य)

② **विधेय**:- उद्देश्य के लिए वाक्य में जो कुछ कहा जाता है। वह विधेय कहलाता है। अर्थात वाक्य में क्रिया और कर्म विधेय कहलाते है।

जैसे - बालक पुस्तक पढता है।
(पुस्तक पढता है — विधेय)

वाक्य के भेद :-

वाक्य विचार

- अर्थ के आधार पर → (8)
  1. सकारात्मक
  2. नकारात्मक
  3. प्रश्नवाचक
  4. आज्ञार्थक
  5. इच्छार्थक
  6. संदेहवाची (शंकवाची)
  7. संकेतवाची (शर्तवाची)
  8. विस्मयादिबोधक
- प्रयोग / रचना / बनावट / निर्माण व्युत्पत्ति के आधार पर → (3)
  - सरल
  - संयुक्त
  - मिश्रित
    - प्रधानवाक्य
    - आश्रित
      - संज्ञा आश्रित
      - विशेषण आश्रित
      - क्रिया विशे० आश्रित
- क्रिया के आधार पर → (3)
  - कर्तृवाच्य / कर्तृप्रधान
  - कर्म वाच्य
  - भाव वाच्य

① → अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद –

→ अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद होते है।

① सकारात्मक → पप्पू पढ़ता है।
② नकारात्मक → पप्पू नही पढ़ता है।
③ प्रश्नवाचक → क्या पप्पू पढ़ता है।
④ आज्ञार्थक → पप्पू तुम पढ़ो
⑤ इच्छार्थक → भगवान मेरे पप्पू को पास करा देना
⑥ संकेतार्थक (शर्तवाची) → पप्पू तुम पास हो गए तो तुम्हे मोबाईल दिलाऊगा
⑦ संदेहार्थक (शकवाची) → शायद पप्पू पढ़ता है।
⑧ विस्मयादिबोधक → वाह! मेरा पप्पू पास हो गया

② रचना / बनावट / निर्माण / व्युत्पति के आधार पर —

→ इनके आधार पर वाक्य के 3 भेद होते है।

(i) <u>सरल वाक्य</u> :— जिस वाक्य मे एक ही उद्देश्य व एक ही विधेय होता है। वह सरल वाक्य कहलाता है।

→ सरल वाक्य को साधारण वाक्य भी कहा जाता है।

<u>Note</u> — वाक्य मे उद्देश्य एक से ज्यादा भी हो सकते है। परन्तु विधेय हमेशा एक ही होगा वह वाक्य सरल वाक्य कहलाता है।

<u>जैसे</u> — आनिल पत्र लिख रहा है।

- मेरा भाई महेन्द्र विद्यालय मे पढ़ाता है।
- लंका का राजा रावण सीता को उठा कर ले गया।
- भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाडी सचिन तेन्दुलकर, विराट कोली, रोहित शर्मा, आशिष मेहरा, जहीर खान और महेन्द्र सिंह धोनी ने भारत को वर्ल्ड कप दिलाया।

(ii) **संयुक्त वाक्य** — जहाँ दो सरल वाक्य किसी संयोजक से जुड़े हो तो वहाँ वह वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है।

पहचान चिन्ह :— लेकिन, किन्तु, परन्तु, या, अथवा, मगर बल्कि,,

और / पर → जोड़ता है। → सरल वाक्य

और / पर → अलग / नकारात्मक का बोध → संयुक्त वाक्य

① राम और श्याम पेड़ पर बैठे है → सरल वाक्य

② राम बाजार गया पर कुछ नही लाया → संयुक्त वाक्य

③ मोहन विद्यालय जाकर पढ़ाई करता है। और श्याम दिनभर क्रिकेट खेलता है। → संयुक्त वाक्य

Ex –

① मोहित खेल रहा है। और सोहन किताब पढ़ रहा है।

② मैं भी अध्यापक बन जाता परन्तु पढ़ाई नहीं की

③ 26 अप्रैल को बाजार बंद था क्योंकि मतदान हो रहा था।

(iii) मिश्र / मिश्रित वाक्य :– जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हो तो वह वाक्य मिश्र वाक्य कहलाता है।

→ मिश्र वाक्य के तीन भेद / उपभेद होते है।

① संज्ञा आश्रित मिश्र वाक्य :– प्रधान उपवाक्य की संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले वाक्य को संज्ञा आश्रित मिश्र वाक्य कहते है।

→ संज्ञा आश्रित मिश्र वाक्य (कि) से शुरु होते है।

जैसे :– ① अभिषेक सर ने कहा कि रविवार को परख होगा

② पिताजी चाहते है। कि मैं भी अध्यापक बन जाऊ।

③ गीता में लिखा है। कि कर्म करते रहो फल की चिंता मत करो

② **विशेषण आश्रित मिश्र वाक्य** :- प्रधान उपवाक्य की संज्ञा की विशेषता बताने वाले उपवाक्य को विशेषण आश्रित मिश्र वाक्य कहते है।

→ यह वाक्य जो, जिनको, जिनसे, जिसे, जिन्हें, जिन्होने, जिसके, जिन्होने, आदि से शुरु होते है।

Ex- ① जो विद्यार्थी पढते है। पास हो जाते है।

जिसे भी देखता हूँ वही व्यस्त नजर आता है

जिसको हमने अपना समझा जो निकला बेगाना।

③ **क्रिया विशेषण मिश्रित वाक्य** :- जो वाक्य क्रिया की विशेषता बताते है या प्रकट करते है। क्रिया विशेषण मिश्रित वाक्य कहलाते है।

यह वाक्य जब, तब, इसलिए, क्योंकि, यद्यपि यदि तो, तथापि, जो हि, तपो, भी आदि से शुरु होते है।

Ex इसलिए मैं गाँव नही जा सका क्योंकि बारिश तेज हो रही थी।

यदि मैं पढता तो अध्यापक बन जाता था

★ क्रिया के आधार पर —

इस आधार पर क्रिया के तीन भेद होते हैं।

① कर्ता प्रधान / कर्तृवाच्य

① **कर्ता प्रधान :-** जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है। वहाँ कर्ता प्रधान वाक्य कहलाता है।

→ कर्ता प्रधान वाक्य को कर्तृवाच्य वाक्य भी कहते हैं।

→ कर्ता प्रधान वाक्य में क्रिया कर्ता के लिंग व वचन के आधार पर बदलती है।

जैसे बालक पुस्तक पढ़ता है।

बालिका पुस्तक पढ़ती है।

बच्चे पुस्तक पढ़ते हैं।

Note - कर्ता प्रधान वाक्य में क्रिया अकर्मक व सकर्मक दोनों हो सकती है।

② **कर्मवाच्य / कर्मप्रधान :-** जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है। वह कर्मप्रधान वाक्य कहलाता है।

→ कर्मप्रधान वाक्य को कर्मवाच्य भी कहते हैं।

→ कर्मप्रधान वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग व वचन के आधार पर बदलती है।

→ कर्ताप्रधान वाक्य से कर्मवाच्य बनाते समय
① कर्ता के साथ (ने / के द्वारा) जोड़ा जाता है।
② क्रिया भूतकाल मे बदल देते है।

जैसे - बालक ने पुस्तक पढ़ी

बालिका ने पुस्तक पढ़ी

बच्चे ने पुस्तक पढ़ी

<u>NOTE (1)</u> जहाँ कार्य स्वतः होता है। वहाँ कर्म प्रधान वाक्य होता है।

<u>जैसे</u> - बाराँ में बाढ़ आई

बाराँ मे चार दिन से गर्मी बढ रही है।

ठण्डी हवा बहती है।

<u>NOTE (2)</u> वाक्य में कर्ता असात होने की स्थिति मे वाक्य कर्मवाच्य होगा

<u>जैसे</u> - पत्र प्रेक्षित किया जा रहा है।

पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है।

NOTE (3) यदि वाक्य में कर्ता के स्थान पर संस्था, समाज, सभा, या सरकार आ जाए तो वहाँ भी कर्मवाच्य होगा।

जैसे → विद्यालय ने बालको का भविष्य रोशन किया

→ ब्रह्म समाज ने सती प्रथा का विरोध किया

→ सरकार ने मोबाईल वितरण योजना प्रारम्भ किया।

(3) भाववाच्य :- जिस वाक्य में भाव की प्रधानता होती है। भाव प्रधान वाक्य कहलाता है।

→ ~~भाववाच्य~~ कर्तृप्रधान वाक्य से भाववाच्य बनाते समय
1. कर्ता के साथ "से" जोड़ा जाता है।
2. वाक्य प्राय: नकारात्मक बना देते है।
3. क्रिया अकर्मक व पुंल्लिग एकवचन मे बदल दी जाती है।

जैसे - राहुल से खाया नही जाता

मुझसे बोला नही जाता

पढने से अच्छा है। घर चला जाए।

समास

दो या दो अधिक शब्दो की विभक्ति रहित मेल को समास कहते है।

★ समास का विलोम → व्यास (फैलाना)

समास

शाब्दिक अर्थ → पास बैठना / समीप लाना

भेद
- → सामान्य रूप से →
  1. अव्ययीभाव समास
  2. तत्पुरुष समास
  3. कर्मधारय समास
  4. द्विगु समास
  5. द्वन्द्व समास
  6. बहुव्रीहि समास
- → पदों की प्रधानता के आधार
  - → प्रथम पद प्रधान → अव्ययीभाव
  - → द्वितीय पद प्रधान →
    1. तत्पुरुष समास
    2. कर्मधारय समास
    3. द्विगु समास
  - → दोनों पद प्रधान → द्वन्द्व समास
  - → अन्य पद प्रधान → बहुव्रीहि समास

→ समास में दो शब्दों का मेल होता है। जबकि सन्धि में दो वर्णों का मेल होता है।

जैसे → रसोई घर → रसोई के लिए घर
वर वधू → वर के लिए वधू

प्रत्येक सामासिक पद में दो पद होते हैं। ① प्रथम पद → पूर्व पद ② द्वितिय पद → उत्तर पद

1) **अव्ययीभाव समास** :— इस समास का पहला पद प्रधान होता है।

→ जिस सामासिक पद का पहला पद अव्यय होता है। वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

→ सभी उपसर्ग प्रत्यय अव्यय कहलाते हैं।

जैसे —
यथा शक्ति → शक्ति के अनुसार
यथा समय → समय के अनुसार
बाइज्जत → इज्जत सहित
बेइज्जत → इज्जत रहित
अनादर → आदर रहित
आकण्ठ → कण्ठ तक
आमरण → मरण तक
आजन्म → जन्म तक

NOTE 1 यदि निम्नलिखित शब्दांश किसी भी शब्द में जुड़े हो तो वहाँ भी अव्ययीभाव समास होगा।

जैसे – भर → भरपेट, भरपूर, भरसक, मनभर
पूर्वक → विवाहपूर्वक, स्वतंत्रापूर्वक
उपरांत → मरणोपरांत, विवाहोपरांत
अनुसार → लेखकानुसार, गत्यनुसार
अर्थ → स्नानार्थ, सेवार्थ, मोक्षार्थ

NOTE (2) – यदि एक ही शब्द की पुनरावृत्ती हो रही हो तो वहाँ अव्ययीभाव समास होगा।

जैसे रामू - राम, राधे-राधे, साथ - साथ, धीरे-धीरे
दिनो - दिन, रातो-रात, हाथो - हाथ, बीचो-बीच
भागम- भाग, कहो ना कहो, कुछ ना कुछ,
कभी ना कभी

NOTE (3) ~~कुर्तता~~ उनता वाचक शब्दो में भी अव्ययीभाव समास होता।

जैसे – उनबीस, उनतीस, उनचालीस, उनहत्तर।

(2) तत्पुरुष समासः – इसमे द्वितिय पद प्रधान होता है।

→ जिस सामासिक पद में कारक चिन्ह अथवा विभक्ति चिन्ह का लोप हो जाता है। वहाँ तत्पुरुष समास होता है।

→ तत्पुरुष समास के छः उपभेद होते है।

→ कर्ता कारक व सम्बोधन कारक को छोड़कर शेष सभी छः कारक तत्पुरुष समास के उपभेद होते है।

(1) **कर्मकारक :-** को विभक्ति का लोप

Ex -
स्वर्गप्राप्त → स्वर्ग को प्राप्त
शरणागत → शरण को ~~प्राप्त~~ आगत
यशप्राप्त → यश को प्राप्त
जेबकटा → जेब को काटने वाला
चिड़ियामार → चिड़िया को मारने वाला
मुंहतोड़ → मुंह को तोड़ने वाला
मक्खीचूस → मक्खी को चूसने वाला
आफतीजनक → आपती को जन्म देने वाला
कठफोड़ा → काठ को फोड़ने वाला

(2) **करण कारण :-** से के द्वारा का लोप

Ex -
बाढ़पीड़ित → बाढ़ से पीड़ित
रोगपीड़ित → रोग से पीड़ित
तुलसीरचित → तुलसी के द्वारा रचित
तारोजड़ी → तारो से जड़ित
आखोदेखी → आखो से देखी
रेखांकित → रेखा से अंकित
रेलयात्रा → रेल के द्वारा यात्रा
हस्तलिखित → हाथो से लिखित
हैदराबाद → हैदर से आबाद
इलाहाबाद → अल्ला से आबाद
मुंहमांगा → मुंह से मांगा
रत्नजड़ित → रत्न से जड़ित

③ **सम्प्रदान कारक:-** के लिए, को का लोप

शिवार्पण → शिव को अर्पण
विद्यालय → विद्या के लिए आलय
पुस्तकालय → पुस्तक के लिए आलय
रसोईघर → रसोई के लिए घर
गोशाला → गो के लिए शाला
पाठशाला → पठन के लिए शाला
युद्धभूमि → युद्ध के लिए भूमि
रंगमंच → रंग के लिए मंच
हवन सामग्री → हवन के लिए सामग्री
हवनकुण्ड → हवन के लिए कुण्ड
देवार्पण → देव के लिए अर्पण
शिक्षकभर्ती → शिक्षक के लिए भर्ती

④ **अपादान कारक:-** से, अलग होने का लोप

रोगमुक्त → रोग से मुक्त
बाढमुक्त → बाढ से मुक्त
विद्यावंचित → विद्या से वंचित
मतिभ्रष्ट → मति से भ्रष्ट
देशनिकाला → देश से निकाला
जातबाहर → जात से बाहर
प्रेमवंचित → प्रेम से वंचित

⑤ **सम्बंध कारक:-** का, के, की, का लोप

राष्ट्रपति → राष्ट्र का पति
सेनाध्यक्ष → सेना का अध्यक्ष
राजकुमारी → राजा की कुमारी

राजकुमार → राजा का कुमार
दादाबाड़ी → दादा की बाड़ी
कन्यादान → कन्या का दान
नेत्रदान → नेत्र का दान
रक्तदान → रक्त का दान
रामचरित → राम का चरित
चम्बलतट → चम्बल का तट
गंगाजल → गंगा का जल
अमृतधारा → अमृत की धारा

⑥ **अधिकरण कारण** — मे पर का लोप

सिरदर्द → सिर मे दर्द
कमरदर्द → कमर मे दर्द
जलमगन →
ध्यानमगन →
वनवास →
युद्धवीर →
हरफनमौला → हर फन मे मौला (हर) → हर कार्य मे श्रेष्ठ
डिब्बाबन्द →

★ लुप्त पद तत्पुरुष समासः—

→ जिस सामासिक पद में विभक्ति चिन्ह अथवा कारक चिन्हों का लोप न होकर सम्पूर्ण पद का लोप हो जाता है। वहाँ लुप्तपद तत्पुरुष समास होता है।

रेलगाड़ी → रेल पर चलने वाली गाड़ी
बैलगाड़ी → बैल के द्वारा चलने वाली गाड़ी
पवनचक्की → पवन के द्वारा चलने वाली चक्की

पनचक्की → पानी के द्वारा चलने वाली चक्की
जेबघड़ी → जेब में रखी जाने वाली घड़ी
वायुयान → वायु में चलने वाला यान
जलयान → जल में चलने वाला यान
दहीबड़ा → दही में डूबा हुआ बड़ा
अश्रुगैस → आँसू लाने वाली गैस
सीसमहल → सीसे का बना हुआ महल
गोबरगणेश → गोबर के बने गणेश

③ **कर्मधारय समास** :— इस समास द्वितीय पद प्रधान होता है।

→ जिस सामासिक पद में विशेषण विशेष्य तथा उपमेय, उपमान का सम्बध पाया जाता है। वहाँ कर्मधारय समास होता है।

उपमेय	उपमान
जिसकी तुलना	जिससे तुलना

जैसे

महात्मा → महान है जो आत्मा
महावीर → महान है। जो वीर
कुपुत्र → बुरा है जो पुत्र
सुपुत्र →
कुविचार →
महबुद्धि →
बदनाम → बुरा है। जो नाम
खुशबू →
खुशकिस्मत → अच्छी है जो किस्मत
सज्जन → अच्छा है जो जन
दुर्जन → बुरा है। जो जन

दुर्गन्ध → बुरी है जो गन्ध
अद्धजला → आधा है जो जला
नववर्ष → नया है जो वर्ष
मिनाक्षी → मछली के समान आँखे
मृगनयनी → मृग के समान नयन
चन्द्रमुखी → चन्द्रमा के समान मुख
पाषाणहृदय → पत्थर के समान हृदय
राजीवलोचन → राजीव के समान नयन
क्रोधाग्नि → क्रोध के समान अग्नि

(4) <u>द्विगु समास</u> :- इस समास का द्वितीय पद प्रधान होता है।

→ द्विगु शब्द का शाब्दिक अर्थ दो गायों का समूह होता है।
→ द्विगु शब्द में भी दिगु समास होगा।
→ जिस सामासिक पद का पहला पद संख्यावाची हो तथा विग्रह करने पर किसी तीसरे अर्थ का बोध न कराकर समूह या समाहार का बोध कराता हो वहाँ द्विगु समास कहलाता है।
→ द्विगु समास निम्न में से कोई भी एक शर्त पूरी करता है।

→ (1) पहला पद संख्यावाची ~~कुल~~
(2) द्वितीय पद प्रधान
(3) समूह / समाहार का बोध

<u>जैसे</u> -
त्रिवेणी → तीन वेणियों का समूह
त्रिकोण → तीन कोणों का समूह
चतुर्वेद → चार वेदो का समूह
पञ्चामृत → पाँच अमृत का समूह
पञ्चतंत्र → पाँच तंत्रों का समूह

सप्तऋषि → सात ऋषियों का समूह
सतरंगी → सात रंगों का समूह
सप्तमासा → सात महीनों का समूह
अष्टांग → आठ अंगों का समूह
अष्टधातु → आठ धातुओं का समूह
नवरात्र → नौ रात्रों का समूह
नवरंग → नौ रंगों का समूह
नवरत्न → नौ रत्नों का समूह
नौमहला → नौ महलों का समूह
दशाब्दी → दश शताब्दीयों का समूह
शताब्दी → सौ शताब्दीयों का समूह

(5) **द्वन्द्व समास** — इस समास मे दोनो पद प्रधान होते हैं।

→ जिस सामासिक पद में दोनों पद प्रधान होते हैं। तथा विग्रह करने पर और, तथा, एव, और, अथवा, आदि, इत्यादि आते हैं। वहां द्वन्द्व समास होता है।

→ एक मात्र समास जिसमे योजक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।

→ द्वन्द्व समास के तीन उपभेद होते हैं।

1. इतरेतर द्वन्द्व → और, तथा
2. वैकल्पिक द्वन्द्व → या, अथवा
3. समाहार द्वन्द्व → आदि, इत्यादि

NOTE — जहां दोनो पद प्रधान होते हैं। वहां विग्रह और, तथा, एवं से होगा।

जैसे — मातापिता → माता और पिता
वरवधू → वर और वधू

भाईबहन → भाई और बहन
दालरोटी → दाल और रोटी
दुधरोटी → दुध और रोटी
राधाकृष्ण → राधा और कृष्ण
सीताराम → सीता और राम
उमाशंकर → उमा और शंकर
कृष्णाउर्जन → कृष्ण और अर्जुन
हिमारर्जन → हिम और अर्जन
पच्चीस → पाँच और बीस
छतीस → छ. और तीस
बत्तीस →

NOTE 2 — सख्यावाची शब्दो में तथा विलोमशब्दो मे समास विग्रह करने पर या, अथवा आता है।

एक - दो → एक और दो
चार - पाँच → चार या और पाँच
पाँच - पच्चीस → पाँच या और पच्चीस
सुबह - साम → सुबह या शाम
रात - दिन → रात या दिन
पाप - पुण्य → पाप अथवा पुण्य
सुख - दुख → सुख या दुख
जन्म - मरण → जन्म या मरण

NOTE-3 प्रतिध्वनि वाले शब्दो में आदि इत्यादि लगाकर समास विग्रह किया जाता है।

जैसे - चाय वाय → चाय आदि
पानी वानी → पानी आदि
खाना वाना → खाना आदि

पान वान — पान आदि
अड़ोसी पड़ोसी — ~~अड़~~ पड़ोसी आदि
प्यार - व्यपार — प्यार आदि
सिलाई - पिलाई — सिलाई आदि
अगल - बगल — बगल आदि

⑥ **बहुव्रीही समास** – इस समास तीसरा या अन्य पद प्रधान होता है।

→ बहुव्रीही का शब्दिक अर्थ बहुत सारे चावल होते है।

→ जिस सामासिक पद का विग्रह करने पर सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी तीसरे या अन्य अर्थ का बोध कराता है। तो वहा बहुव्रीही समास होता है।

जैसे –

एकदन्त	→	एक दाँत है जिनके	(गणेश जी)
लम्बोदर	→	लम्बा है जो उदर जिसका	(गणेश जी)
गजवदन	→	गज का वदन है। जिनका	(गणेश जी)
त्रीनेत्र	→	तीन नेत्रो का स है जिनके	(शिवजी)
आशुतोष	→	शीघ्र प्रसन्न होता है। जो	(शिवजी)
गंगाधर	→	गंगा को धारण करता है जो	(शिव जी)
कैलाशपति	→	कैलाश के पति है जो	(शिवजी)
चतुर्भुज	→	चार भुजा है जिसकी	(विष्णु)
चतुरानन	→	चार आनन है जिनके	(ब्रह्मा जी)
पंचानन	→	पाँच आनन है जिनके	(शिवजी)
षडानन	→	छः आनन है जिनके	(कार्तिकेय)
मयूरवाहन	→	मयूर वाहन है जिनके	(कार्तिकेय)
मेघनाथ	→	मेघ का नाथ है जो	(इन्द्र)

मेघनाद → मेघ का नाथ है जो (इन्द्र)
चन्द्रहास → चन्द्रमा के समान हसी है। जिसकी (रावण की तलवार)
पीताम्बर → पीला है वस्त्र जिनका (कृष्ण जी)
इन्द्रजीत → इन्द्र को जीतने वाला (मेघनाथ)
शचीपती → शची का पति है जो (इन्द्र)
उमापति → उमा का पति है जो (शिव जी)
रमापति → रमा का पति है जो (विष्णु जी)
नाकपति → नाक का पति है जो (इन्द्र) नाक (स्वर्ग)
राधारमण → राधा के साथ रमण करते है जो (कृष्ण)
रेवतीरमण → रेवती के साथ रमण करते है जो (बलराम)
पद्मासन → पद्म के समान आसन है। जिनका (विष्णु)
पद्मासना → पद्म के आसन पर बैठी है जो (लक्ष्मी)
शाखामृग → शाखा पर हिरण के तरह दौड़ता है जो (बन्दर)

संधि

→ संधि का शाब्दिक अर्थ (जोड़ना) होता है।

→ संधि का विलोम (तोड़ना / विच्छेद / विग्रह) होता है।

→ दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते है।

→ संधि दो वर्णों का मेल है। जबकि समास मे दो शब्दों का मेल

संधि सूत्र :— प्रथम शब्द का अंतिमवर्ण + द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण

विकार
संधि

→ **संधि के भेद :—**

भेद

- स्वर
  - स्वर + स्वर
    - दीर्घ संधि
    - गुण संधि
    - वृद्धि संधि
    - यण संधि
    - अयादि संधि
- व्यंजन
  - व्यंजन + स्वर
  - स्वर + व्यंजन
  - व्यंजन + व्यंजन
- विसर्ग (:)
  - विसर्ग (:)

⊕ ~~दीर्घ संधि~~ —

(1) **स्वर संधि** — जहाँ स्वर का मेल स्वर से होने से होने पर जो विकार उत्पन्न होता है। वहाँ स्वर संधि होती है।

→ स्वर संधि के 5 भेद होते हैं।

(1) दीर्घ संधि
(2) गुण संधि
(3) वृद्धि संधि
(4) यण संधि
(5) अयादि संधि

(1) **दीर्घ संधि :–** जहाँ दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। वह दीर्घ सन्धि होती है।

① अ / आ + अ / आ → आ
② इ / ई + इ / ई → (ी)
③ उ / ऊ + उ / ऊ → ऊ (ू)

उदा – दिन + अंक
अ + अ
आ

सरयु + ऊर्मि
उ + ऊ
ऊ

रवि + इन्द्र
इ + इ
ई
रवीन्द्र

निशा + अतं → निशांत
दिप + अवली → दिपावली
रचना + अवली → रचनावली
दिवस + अंत → दिवसांत
विधा + आलय → विधालय
पुस्तक + आलय → पुस्तकालय
हिम + आलय → हिमालय
श्री + ईश → श्रीश
नारी + ईश्वर → नारीश्वर
रजनी + ईश → रजनीश
रची + इन्द्र → रचीन्द्र
प्रति + ईक्षा → प्रतीक्षा
परि + ईक्षा → परीक्षा
अनु + उदय → अनूदय
मृत्यु + उपरांत → मृत्यूपरांत
अनु + उदित → अनूदित

(२) गुण संधि —

अ / आ + इ / ई → ए (े)
① अ / आ + उ / ऊ → ओ (ो)
② अ / आ + ऋ → अर्
③

★ गण + ईश
अ + ई
ए
गणेश

★ देव + ऋषि
अ + ऋ
देवर्षि

पर + उपकार
अ + ऊ
परोपकार

रमा	+	ईश	→	रमेश
धर्म	+	इन्द्र	→	धर्मेन्द्र
महा	+	इन्द्र	→	महेन्द्र
अल्प	+	इष्टी	→	अल्पेष्टी
नव	+	उदय	→	नवोदय
महा	+	ईश्वर	→	महेश्वर
परम	+	ईश	→	परमेश
सर्व	+	उदय	→	सर्वोदय
नव	+	उदय	→	नवोदय
प्राप्त	+	उदक	→	प्राप्तोदक
मरण	+	उपरांत	→	मरणोपरांत
रोग	+	उपचार	→	रोगोपचार
राज	+	ऋषि	→	राजर्षि
शीत	+	ऋतु	→	~~शीतर्षि~~ शीतर्तु

(3) <u>वृद्धि संधि</u> :—

① अ / आ + ए / ऐ → ऐ (ै)
② अ / आ + ओ / औ → औ (ौ)

★ सदा + एव
आ + ए
ऐ
सदैव

★ अभिषेक + ऐश्वर्य
अ + ऐ
अभिषेक + ऐ + श्वर्य
अभिषेकैश्वर्य

एक	+	एक	→	एकैक
हित	+	एषी	→	हितैषी
स्व	+	ऐच्छिक	→	स्वैच्छिक
मत	+	ऐक्य	→	मतैक्य

पुत्र + एषणा → पुत्रैषणा
जल + ओक → जलौक
वन + ओषधि → वनौषधि
प्र + औद्योगिक → प्रौद्योगिक
जल + ओषधि → जलौषधि
न्याय + औचित्य → न्यायौचित्य

(4) यण संधि :-

① इ / ई + असमान स्वर (य)
② उ / ऊ + —"— (व)
③ ऋ + —"— (र)

सु + अच्छ
उ + अ
व
स्वच्छ

पितृ + अनुमति
ऋ + अ
र
(पित्रनुमति)

अधि + अक्ष → अध्यक्ष
परि + आवरण → पर्यावरण
प्रति + आशा → प्रत्याशा
गति + अनुसार → गत्यनुसार
रीति + अनुसार → रीत्यानुसार
अधि + अयन → अध्यायन
नदी + अर्पण → नद्यर्पण
स्त्री + उपयोगी → स्त्र्युपयोगी
अभि + उत्थान → अभ्युत्थान
संधि + आ → सध्या

परि + अंत → पर्यंत
प्रति + उत्तर → प्रत्युत्तर
अनु + अय → अन्वय
सु + इच्छा → सविच्छा
सु + आगत → स्वागत
मनु + अन्तर → मन्वंतर
तनु + अंगी → तन्वंगी
अनु + एषण → अन्वेषण।
पितृ + आदेश → पित्रादेश
मातृ + आदेश → मात्रादेश

⑤ अयादि संधि →

① ए + असमान स्वर → अय्
② ऐ + —"— → आय्
③ ओ + —"— → अव्
④ औ + —"— → आव्

चे + अन
ए + अ
अय
चयन

विधै + अक → विधायक
भौ + अना → भावना
नै + अन → नयन
शे + अन → शयन
जे + अ → जय
संचे + अ → सचय
नै + अक → नायक

नै + इका → नायका

विधै + इका → विधायका

गै + इक → गायिका

गै + इका → गायिका

भो + अन → भवन

हो + अन → हवन

पो + अन → पवन

पो + इत्र → पवित्र

प्रसौ + इका → प्रसाविका

व्यंजन संधि

rule 1 → वर्ग I + वर्ग $_{III, IV}$ / य, व, र, ल, ह / स्वर (11)

↓

3

क्	ख्	ग	घ्	ङ्
च्	छ्	ज	झ	ञ
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण
त्	थ	द	ध	न
प	फ्	ब	भ	म

प्राक् + ऐतिहासिक

प्राग + ऐतिहासिक

प्रागैतिहासिक

जगत् + ईश → जगदीश
वाक् + ईश → वागीश
ऋक् + वेद → ऋग्वेद
वाक् + देवी → वाग्देवी
दिक् + दर्शन → दिग्दर्शन
वाक् + दान → वाग्दान
अच् + अंत → अजंत
पच् + आब → पंजाब
षट् + अंग → षडंग
षट् + आनन → षडानन
जगत् + अम्बा → जगदम्बा
सत् + उपयोग → सदुपयोग
सत् + भावना → सद्भावना
तत् + अंतर → तदंतर
अप् + ज → अब्ज
अप् + द → अब्द

rule 2 → वर्ग 1 + वर्ग 5
↓
5

वाक् + मय → वाङ्मय
जगत् + नाथ → जगन्नाथ
श्रीमत् + नारायण → श्रीमन्नारायण
पराक् + मुख → पराङ्मुख
दिक् + नाथ → दिङ्नाथ
षट् + मास → षण्मास
दिक् + मुख → दिङ्मुख
मृद् + मय → मृण्मय
जगत् + माता → जगन्माता

सत् + मति → सन्मति
तत् + मय → तन्मय
उत् + मूलन → उन्मूलन

rule 3 → स्वर + छ
↓
(च्)

वि + छेद → विच्छेद
अनु + छेद → अनुच्छेद
आ + छादित → आच्छादित
आ + छादन → आच्छादन
प्रति + छवि → प्रतिच्छवि
तरु + छाया → तरुच्छाया
स्व + छन्द → स्वच्छन्द
शिव + छाया → शिवाच्छाया

rules 4 → इ / उ + स
↓
(ष)

अभि + सेक → अभिषेक
सु + समा → सुषमा
सु + स्मिता → सुष्मिता
तु + सार → तुषार
वि + सम → विषम
नि + संग → निषंग
नि + सेध → निषेध
अनु + संग → अनुषंग
नि + सेचन → निषेचन

rules 4 → इ / उ + स्थ → ष्ठ

(ष्)(ठ)

प्रति + स्था → प्रतिष्ठा
प्रति + स्थित → प्रतिष्ठित
वि + स्था → विष्ठा
अधि + स्थाता → अधिष्ठाता
अधि + स्थुर → अधिष्ठुर
नि + स्थुर → निष्ठुर
कनि + स्थ → कनिष्ठ
परि + स्थ → परिष्ठ
अनु + स्थान → अनुष्ठान

rule 5 → म् + अन्तस्थ व्यंजन / ऊष्मीय व्यंजन

(ं) य, र, ल, व, श, ष, स, ह

सम + हार → सम्ं संहार
सम + योग → संयोग
सम + लाप → संलाप
सम + वत् → संवत
स्वयम + वर → स्वयंवर
सम + शय → संशय
सम + सार → संसार

त / द की संधि →

rules → 6

① त् / द + च → च्च
② त् / द + ज → ज्ज

③ त / द + ट → ट्ट
④ त / द + ड → ड्ड
⑤ त / द + ल → ल्ल

उत् + डयन → उड्डयन
उत् + ज्वल → उज्ज्वल
सत् + चारण → सञ्चारण
सत् + चित → सञ्चित
उत् + चय → उच्चय
सत् + चित् + आनन्द → सच्चिदानन्द
उत् + जयिनी → उज्जयिनी
जगत् + जननी → जगज्जननी
सत् + जन → सज्जन
श्रीमत् + जिनेन्द्र → श्रीमज्जिनेन्द्र
आपद् + जाल → आपज्जाल
उत् + टीका → उट्टीका
सत् + टीका → सट्टीका
उत् + डीन → उड्डीना
उत् + लास → उल्लास
उत् + लंघन → उल्लंघन
उत् + लिखित → उल्लिखित
उत् + लेख → उल्लेख
उत् + चारण → उच्चारण
भगवत् + लीला → भगवल्लीला

Rules 8 → त / द + श
↓ ↓
च छ

उत् + श्वास → उच्छ्वास
उत् + श्वसन → उच्छ्वसन
सत् + शास्त्र → सच्छास्त्र
जगत् + शांति → जगच्छांति
श्रीमत् + शंकराचार्य → श्रीमच्छंकराचार्य
संसद् + शून्यकाल → संसच्छून्यकाल
श्रीमत् + शरत् + चन्द्र → श्रीमच्छरच्चन्द्र

rules 9 → त् + ह
↓ ↓
द् ध

पत् + हति → पद्धति / पद्धति
उत् + हृदय → उद्धृदय
उत् + हार → उद्धार
सित् + हस्त → सिद्धस्त
तत् + हित → तद्धित
सित् + ह → सिद्ध

rules 10 → सम् + कृ धातु
↓ ↓
(ं) स्

सम + कृति → संस्कृति
सम + कार → संस्कार
सम + करण → संस्करण
सम + कारक → संस्कारक
सम + कर्ता → संस्कर्ता
सम + कर्म → संस्कर्म

rules II → परि + कृ धातु
↓
ष / ष

परि + कार → परिष्कार
परि + कृत → परिष्कृत
परि + कृति → परिष्कृति
परि + कारक → परिष्कारक
परि + कर्ता → परिष्कर्ता
परि + कर्म → परिष्कर्म

विसर्ग संधि

rules I — अ / आ + : + 3, 4, 5 / य, व, र, ल ह / स्वर (11)
↓
(ओ)

मन: + विकार → मनोविकार
मन: + ज → मनोज
अध: + वस्त्र → अधोवस्त्र
अध: + हस्ताक्षरकर्ता → अधोहस्ताक्षरकर्ता
पुर: + धा → पुरोधा
पय: + धि → पयोधि
पय: + द → पयोदा
सर: + ज → सरोज
सर: + रूह → सरोरुह
नम: + नारायण → नमोनारायण
नम: + नम → नमोनम
तम: + गुण → तमोगुण
रज: + गुण → रजोगुण

मनः + विज्ञान → मनोविज्ञान
यशः + धरा → यशोधरा
यशः + दा → यशोदा

rules 2 → इ / उ + : + 3,4,5 / य, र, ल, व, ह, / स्वर (11)
↓
(र)

निः + जन → निर्जन
निः + अवयव → निरवयव
निः + उत्तर → निरुत्तर
निः + बोध → निर्बोध
निः + उद्देश्य → निरउद्देश्य
निः + विरोध → निर्विरोध
दुः + आत्मा → दुरात्मा
दुः + अवस्था → दुरवस्था
दुः + आचार → दुराचार
आयुः + विज्ञान → आयुर्विज्ञान
दुः + लाभ → दुर्लभ
चतुः + अंग → चतुरंग
चतुः + आनन → चतुरानन
बहिः + रंग → बहिरंग
ज्योतिः + दर्शन → ज्योतिर्दर्शन
दुः + गम → दुर्गम

rules 3 → अ / आ + : + क, ख, प, फ
↓
(:)

अधः + पतन → अधःपतन
पयः + पान → पयःपान
रजः + कण → रजःकण
पुनः + प्रेक्षण → पुनःप्रेक्षण
मनः + पाप → मनःपाप
प्रातः + काल → प्रातःकाल
मनः + कामना → मनःकामना

rules 4 → इ/उ + ः + क, ख, प, फ
↓
(ष्)

निः + पाप → निष्पाप
दुः + परिणाम → दुष्परिणाम
निः + पति → निष्पति
निः + कृप → निष्कृप
चतुः + पथ → चतुष्पथ
बहिः + कृत → बहिष्कृत
चतुः + फल → चतुष्फल
दुः + कर्म → दुष्कर्म
दुः + प्रभाव → दुष्प्रभाव
आविः + कार → आविष्कार
बहिः + कार → बहिष्कार

rules 5 → इ / उ + ः + र
↓ ↓
ई / ऊ (x)

निः + रोग → नीरोग
धीः + रुज → धीरुज
चक्षुः + रोग → चक्षूरोग
निः + रज → नीरज
निः + रन्ध्र → नीरन्ध्र
निः + रव → नीरव
दुः + रम्य → दूरम्य
दुः + राज → दूराज

rule 6 → भाः / तिः / पुरः / श्रेयः / परः / वनः / वाचः / बृहः / नम
+ : + क, प
↓
(स)

भाः + कार → भास्कार
तिरः + कार → तिरस्कार
पुरः + कार → पुरस्कार
श्रेयः + कर → श्रेयस्कर
परः + पर → परस्पर
वनः + पति → वनस्पति
वाचः + पति → वाचस्पति
बृह + पति → बृहस्पति
नम + कार → नमस्कार

rules 7 → अन्त / पुन / प्रात + : + 3,4,5, / य, र, ल, व, ह / स्वर
↓
(र)

अन्त: + राष्ट्रीय → अन्र्राष्ट्रीय
अन्त: + दर्शन → अन्तर्दर्शन
अन्त: + देशीय → अन्तर्देशीय
अन्त: + आ → अन्तरा
अन्त: + धान → अन्तर्धान
पुन: + अवलोकन → पुनरवलोकन
पुन: + आगमन → पुनरा पुनर्आगमन
पुन: + जागरण → पुनरजागरण
पुन: + उद्देश्य → पुनरुद्देश्य
पुन: + दर्शन → पुनर्दर्शन
प्रात: + आशा → प्रातराशा
प्रात: + उदय → प्रातरुदय

Rule 7 →
① स्वर + : + च / छ / श → श्
② स्वर + : + ट / ठ / ष → ष्
③ स्वर + : + त / थ / स → स्

नि: + चय → निश्चय
धनु: + टंकार → धनुष्टंकार
नि: + चिंत → निश्चिंत
नि: + शुल्क → निश्शुल्क
अन्त: + चेतना → अन्तश्चेतना
मन: + चिकित्सक → मनश्चिकित्सक
नि: + छल → निश्छल
नि: + तेज → निस्तेज
नि: + तारण → निस्तारण
रेगि: + तान → रेगिस्तान
दु: + साहस → दुस्साहस
दु: + सह → दुस्सह

निः + संदेह → निस्संदेह
तप + श्वी → तपस्वी

उपसर्ग

उप + सर्ग
↓ ↓
समीप/आगे सृजन/निर्माण

परिभाषा :— वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के प्रारम्भ या आदि (प्रारम्भ) मे जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते है। या विशेषता ला देते है।

जैसे → अ + सान → असान
वि + सान → विसान

उपसर्ग की विशेषताएँ :—

1. उपसर्ग नवीन शब्द निर्माण मे सहायक है।
2. उपसर्ग नए शब्द भण्डार में वृद्धि करते है।
3. उपसर्ग का स्वतंत्र अस्तित्व नही होता है। यह किसी शब्द के साथ जुड़कर ही सार्थक होते है।

उपसर्ग के भेद :—

→ उपसर्ग के निम्न आधार पर भेद किए जाते है।
1. संस्कृत उपसर्ग
2. हिन्दी उपसर्ग
3. उर्दू या विदेशी उपसर्ग

उपसर्ग	शब्द
अति	अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्याचार, अत्युक्ति अतिक्रमण, अतिजीवन, अत्यन्त, अतिवृष्टि, अत्यन्त
अधि	अधिकार, अधिकरण, अधिराज, अध्यक्ष, अधिकृत, अध्यादेश,
अनु	अनुवाद, अनुरूप, अनुकूल, अनुचार, अनुराग,
अप	अपवाद, अपव्यय, अपभ्रंश, अपराध, अपहरण,
अभि	अभिलाषा, अभ्यास, अभ्यागत, अभिनव, अभ्यर्थी, अभिमन्यु
अव	अवगत, अवरोध, अवतार, अवमानना, अवसाद
अ	अकर्म, अकर्ता, अकथनीय, अगम्य, अकलंक अज्ञान
अध	अधचरा, अधपका, अधमरा, अधखुला
अन	अनंतर, अनादर, अनुचित, अनादि, अनर्थ अनपढ़, अनबन

परा	पराक्रम, पराजय, पराजित, पराभव, परामर्श
उप	उपकार, उपाधि, उपक्रम, उपस्थित, उपमंत्री, उपांग, उपसर्ग
पर	परदेश, परार्थ, परोपकार, परकीय, परजीवी, परकार्य
प्र	प्रदर्शन, प्रार्थी, प्रणाम, प्रसा, प्रथा, प्रकाश, प्रयोजन
स्व	स्वदेश, स्वार्थ, स्वच्छंद, स्वतंत्र, स्वरचित, स्वचर, स्वजन्मा, स्वाबलंबन, स्वेच्छा
~~आदि~~	
कु	कुपात्र, कुखेत, कुपुत्र, कुचक्र, कुचाल,
तत् / तद्	तत्क्षण, तत्काल, तत्सम, तत्सम्बन्धी, तदुपरांत, तद्भव, तद्धित, तन्मय
नि	निबन्ध, निदान, निषेध, निकाय, निग्रह, निगम, निक्षेप
दुर्	दुर्गुण, दुर्गति, दुर्गन्ध, दुर्जन, दुर्बोध, दुर्मति, दुराचरण, दुराचार, दुरभिसंधि
निर्	निरामय, निरापद, निरर्थक, निरक्षर, निराहार, निरीह, निर्जीव, निर्दय, निर्भर, निर्मित, निर्माण,

परि	परिक्रम, परिग्रह, परिक्षेत्र, परिचर, परिभाषा, परिपक्व, परिदोष, परिकल्पना, पर्याप्त, परीक्षा, पर्यायवाची
बिन	बिनबुलाए, बिनमाने, बिनदेखा, बिनकाम, बिनमांगे
वि	विकल, विक्रय, विक्षिप्त, विज्ञान, विरुद्ध, विलाप, विश्राम, विनय, व्याकरण, व्यंजन, विभाग, विराम।
सु	सुकर्म, सुफल, सुगम, स्वागत, सुयश, सुगन्ध, सुरम्य, सुविचार, स्वस्ति, स्वच्छ, सुरक्षा।
सम्	संकीर्ण, संकल्प, संकलन, संक्रांति, संक्रमण, संकोच, संघर्ष, संपर्क, संपूर्ण, संस्था, संसद, समन्वय, संरक्षण, संस्कृत, संपदा, संचालन, संपत्ति, संधान, संपादक।
खुश	खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशहाल
ना	नाराज, नालायक, नादान, नाकाम, नाइंसाफ
बे	बेअदब, बेकसूर, बेदम, बेदखल, बेधर्म, बेवफा, बेचारा
ला	लाचार, लापरवाह, लाजवाब, लावारिस

हम   हमउम्र , हमशक्ल , हमदर्द , हमराह
हमदम , हमराज ।

प्रत्यय

प्रति + अय

शाब्दिक अर्थ → पीछे आना

परिभाषा :— वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते है। प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय के भेद :—

प्रत्यय तीन प्रकार के होते है।
① संस्कृत प्रत्यय
② हिन्दी प्रत्यय
③ उर्दू । विदेशी

① हिन्दी प्रत्यय :— हिन्दी में प्रत्यय दो प्रकार के होते है। ① कृत प्रत्यय ② तद्धित प्रत्यय

① कृत प्रत्यय :— वे प्रत्यय जो क्रिया व धातु के अंत में जुड़ते है। कृत प्रत्यय कहलाते है।

→ कृत प्रत्यय के मेल से बनने वाला शब्द कृदन्त कहलाता है।

अक → लेखक , पाठक , वाचक , गायक

इका → लेखिका , पाठिका , वाचिका , गायिका

अक्कड़ → भुलक्कड़ , घुमक्कड़ , पिलक्कड़

आऊ → बिकाऊ , चलाऊ , टिकाऊ

आक → तैराक , चालाक

आकू → पढाकू , लड़ाकू

हार → पालनहार , राखनहार

वाला → पढ़नेवाला , गानेवाला , पीनेवाला

ना → खाना , गाना , खाना

न → बेलन , खुरचन , ढक्कन

नी → कतरनी , बेलनी , खुरचनी , फूँकनी

आहट → चिल्लाहट , घबराहट , मुस्कुराहट

आवट → सजावट , बनावट , मिलावट , लिखावट

कर → पढ़कर , गाकर , चलकर

हुआ → पढ़ताहुआ , गाताहुआ , चलताहुआ ।

(ख) तद्धित प्रत्यय :— वे प्रत्यय जो संज्ञा व सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ते है। वह तद्धित प्रत्यय कहते है।

→ तद्धित प्रत्यय से बनने वाला शब्द तद्धितांत कहलाता है।

एरा	सपेरा, घसेरा, कसेरा
आर	सुनार, लुहार, कुम्हार
आरा	मछुआरा, हत्यारा
वाला	दूधवाला, फलवाला, चायवाला
ई	माली, तेली, गरीबी, अमीरी, फकीरी
पन	बचपन, अपनापन
आहट	कड़वाहट, चिकनाहट
जा	भानजा, भतीजा
जी	भानजी, भतीजी, जीजा जी
हाल	ददिहाल, ननिहाल
एरा	ममेरा, चचेरा, फुफेरा, मौसेरा
ओई	बहनोई, ननदोई

आ	कलुआ, ललुआ, तनया, अनुजा
इया	खटिया, चुटिया, डिबिया
ई	बाँसुरी, छतरी
आइन	ठकुराइन, चौधराइन
इन	पापिन, नाइन
इनी	सरोजिनी, हथिनी
त्री	अभिनेत्री, रचयित्री
मती	श्रीमती, बुद्धिमती
नी	शेरनी, सिंहनी

प्रत्यय से होने वाले परिवर्तन ⟹

अ, इ, ई, इक, य, आयन, एय

अ → आ हो जाता है।
इ / ई → ऐ
उ / ऊ → औ
ऋ → अर
ए → ऐ
ओ → औ

दिन + इक ⟶ दैनिक
वसुदेव + अ ⟶ वासुदेव
दशरथ + इ ⟶ दाशरथी
पर्वत + ई ⟶ पार्वती
समीप + य ⟶ सामीप्य
समान + य ⟶ सामान्य
भूत + इक ⟶ भौतिक
लोक + इक ⟶ लौकिक
कात्य + आयन ⟶ कात्यायन
गृहस्थ + आयन ⟶ गृहस्थायन

शब्द शुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
अभ्यारण्य	अभयारण्य
रविन्द्र	रवीन्द्र
शाचिन्द्र	शचीन्द्र
कपिश	कपीश
सुक्ति	सूक्ति
भानुदय	भानूदय
* अनुदित	अनूदित
लघुत्तम	लघूत्तम
मृत्युपरांत	मृत्यूपरांत
अभ्यार्थी	अभ्यर्थी
सद्दोपयोग	सदुपयोग
तदोपरांत	तदुपरांत
जगशांति	जगच्छांति
मनोकामना	मनःकामना
अधोपतन	अधःपतन
निरस	नीरस
निशुल्क	निश्शुल्क
दुसाहस	दुस्साहस
दुशासन	दुश्शासन
तपोस्थली	तपस्स्थली

रेफ (र्) सम्बन्धी अशुद्धियाँ :-

सर्मथन	समर्थन
स्वर्गगंगा	स्वर्गगंगा
ज्योर्तिमय	ज्योतिर्मय
बर्हिदर्शन	बहिर्दर्शन
अन्तर्ध्यान	अन्तर्धान
अन्र्तआत्मा	अन्तरात्मा
अर्न्तराष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय
पुर्ननिर्माण	पुनर्निर्माण
आर्शीवाद	आशीर्वाद

समास संबधी अशुद्धियाः—

समाज + इक → सामाजिक / समाजिक ×
शरीर + इक → शारीरिक / शारीरिक
मास + इक → मासिक
इतिहास + इक → ऐतिहासिक

य प्रत्यय सम्बन्धी अशुद्धियाः—

समान + य → सामान्य
लवण + य → लावण्य
मन + य → मान्य
धन + य → धान्य

श्रुतिलेख सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—

अशुद्ध	शुद्ध
हलुवा	हलुआ
रेडियो	रेडिओ

पौधा	पौधा
दुवा	दुआ
धुँवा	धुआँ
लिये	लिए
चाहिये	चाहिए
इसलिये	इसलिए
किजिये	कीजिए
नई	नयी
चवन्नी	चौअन्नी

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—

(M)	(R)	(W)
दवाई	दवाइयाँ	दवाईयाँ
बधाई	बधाइयाँ	बधाईयाँ
मिठाई	मिठाइयाँ	मिठाईयाँ
रोटी	रोटियाँ	रोटीयाँ
नारी	नारियाँ	नारीयाँ
स्त्री	स्त्रियाँ	स्त्रीयाँ
बहू	बहुएँ	बहूएँ
वधू	वधुएँ	वधूएँ

अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ :—

अशुद्ध	शुद्ध
रचयीता	रचयिता
कवियत्री	कवयित्री
वाल्मीकि	वाल्मीकी
मैथिलि	मैथिली

भर्तहरि	भर्तृहरि
मुरारी	मुरारि
कैलाश	कैलास
द्वारिका	द्वारका
कर्ता	कर्ता
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
जागृति	जागृति
दम्पत्ति	दम्पती
अतिथी	अतिथि
महत्व	महत्त्व
निहारिका	नीहारिका
जिजिषीषा	जिजीविषा
सारथी	सारथि
संसद	संसद
श्मश्रु	श्मश्रु
इन्दोर	इन्दौर
चुस्त	चुस्त
श्रृंगार	शृंगार
प्रोज्वल	प्रोज्ज्वल
कार्यवाई	कार्यवाही
नुपुर	नूपुर
स्तुती	स्तुति
त्यौहार	त्योहार

वाक्य शुद्धियाँ

संज्ञा सम्बन्धी अशुद्धिया :—

① अनावश्यक पद सम्बन्धी अशुद्धिया

(i) मैं प्रातः काल के समय घूमने जाता हूँ
मैं प्रातः काल घूमने जाता हूँ।

(ii) प्रदुषण से वायुमण्डल की वायु प्रदुषित हो रही है।
→ प्रदुषण से वायुमण्डल प्रदुषित हो रहा है।

(iii) गोदान नामक उपन्यास ने 'प्रेमचन्द' ने लिखा
→ गोदान उपन्यास प्रेमचन्द ने लिखा।

(iv) माली को पौधो को पानी सिचता है।
→

(v) भोजन बनाने की व्यवस्था का प्रबंधन करो।
→ भोजन बनाने की व्यवस्था करे

(vi) हिमालय पर्वत हमारी रक्षा करता है।
→ हिमालय हमारी रक्षा करता है।

अनुउपयुक्त पद सम्बन्धी अशुद्धिया :—

① रेडियो की खोज मार्कोनी ने की
→ रेडियो का आविष्कार मार्कोनी ने की।

(2) मेरे प्रश्न का समाधान आप कर सकते है।
→ मेरी समस्या का समाधान आप कर सकते है।

(3) महात्मा गांधी की मृत्यु 30 जनवरी 1948 को हुई
→ महात्मा गांधी का निधन 30 जनवरी 1948 को हुई

(4) गले मे गुलामी की बेड़ियां पड़ी है।
→ पैरो मे गुलामी की बेड़िया पड़ी है।

(5) कृष्ण ने कनस कंस की हत्या की
→ कृष्ण ने कंस का वध किया।

→ **सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियां:-**

(1) गोपाल और गोपाल का पुत्र बहुत गरीब है।
→ गोपाल और उस का पुत्र बहुत गरीब है।

(2) मैं एक बार तेरे को बताऊ क्या।
→ मै एक बात तुझको बताऊ क्या।

(3) वह उसका चश्मा घर भूल गया।
→ वह अपना चश्मा घर भूल गया

(4) रमेश थक्का उसके घर चला गया
→ रमेश थक्का अपने घर चला गया।

→ विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ :—

① मौर्यकालीन समय मे लोग बहुत खुश थे।

→ मौर्यकाल मे लोग बहुत खुश।

② विराट कोहली बहुत बड़ा खिलाड़ी था।

→ विराट कोहली बहुत अच्छा खिलाड़ी है।

③ कुत्ते को बोलना का अच्छा लगता है।

→ कुत्ते का भौंकना किसको अच्छा लगता है।

कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—

① → मैने और मेरी ~~पाली~~ पत्नी ने ट्रेन में यात्रा की
→ मैने और मेरी पत्नी ने ट्रेन से यात्रा की

② विद्यार्थी रोज ~~क~~ कोचिंग को आते है।
→ विद्यार्थी कोचिंग मे आते है

③ पण्डित जी ने भक्तो के लिए प्रसाद दिया
→ पंडित ने भक्तो को ~~लिए~~ प्रसाद दिया

④ आज बजट के ऊपर बहस हो गई
→ बजत पर बहस हो गई

⑤ राधा का और कृष्ण का मंदिर धाऊडपाडा में स्थित है।
→ राधा कृष्ण का मंदिर धाऊडपाडा में स्थित है।

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :—
(लिंग)

① बेटी पराए ~~ब~~ घर का धन होता है।
→ बेटी पराए घर का धन होती है।

② लडका और लडकी पढने गई है।
→ लडका लडकी पढने गए है।

③ बारो शहर की सडको को चौडी करनी चाहिए।
→ बारा शहर की सडको को चौडा करना चाहिए

④ मेरी घड़ी मे चार बजा है।
→ मेरी घड़ी मे चार बजी है

⑤ मेरी आखो में से आसू बह रहा था।
→ —— ॥ —— आसू बह रहे थे।

⑥ मेरा प्राण उड गया
मेरे ॥ —— उड गए।

⑦ हमारी कक्षा में सभी वर्गो के विद्यार्थी पढते है।
→ —— ॥ —— सभी वर्ग के

⑧ वर्तनी सम्बन्धी अशुधिया :—

① मैंने अनेको लडके देखे सब बैकिजूल की बाते करते है।
अनेक
→

② नवरात्रा के उपलक्ष में गर्भा का आयोजन रखा जाएगा
→ नवरात्र

③ कालिदास सस्कृत के पकाड़ विद्वान रचियता थे
पकाड़ विद्वान थे
→

पद कर्म सम्बधी अशुद्दिया :—

① यहा पर शुद्द गाय का घी मिलता है
→

② अध्यापक जी भूगोल छात्रो को पढ़ रहा है
→ अध्यापक जी छात्रो का भूगोल पढा रहे है।

③ खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ
→ गाजर को काटकर

④ बच्चो को तल कर पापड़ दो
→ पापड़ को तल कर

⑤ मम्मी को प्लेट मे रखकर खाना दो
→

⑥ रेखा को छीलकर नारंगी दो
→

● लोकोक्तियाँ मुहावरे सम्बन्धी अशुद्धियाँ

① प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है।
→ तलवार की धार पर चलना

② युग परिवर्तन का बीड़ा कौन चबाता है।
→ बीड़ा कौन उठाता है

③ पानी पीकर नाम पहुचना ।
→ पानी पीकर जात पूछना

④ बाल धूप मे सफेद होना
→ धूप में बाल सफेद होना

NOTE कृपया ~~कृप~~ कृपा परस्पर - एक दूसरे प्राय - सभी
स - सहित, शायद - जरूर, तारिख - दिन,
व्यवस्था - प्रबन्ध, अचल - पर्वत, शिर्षक - नाम,

शब्द भेद

तद्भव — ख, न, स, ं,

तत्सम — क्ष, ः, ऋ, ष, ण

- ऐसा स्वतंत्र वर्ण - समूह जिसका एक निश्चित अर्थ हो शब्द कहलाता है।
- शब्द ही जब वाक्य में प्रयुक्त होते है तो वह पद कहलाते है।

⇒ उत्पत्ति (उद्भव) एवं स्त्रोत के आधार पर हिन्दी भाषा मे शब्दो के चार भेद होते है

1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द
4. विदेशज शब्द

तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द

तत्सम शब्द ⇒

⇒ तत्सम शब्द का अर्थ ⇒ संस्कृत के समान (उसके समान)

⇒ जो शब्द संस्कृत संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी मे लिए किए है। बिना परिवर्तन के वह तत्सम शब्द कहलाते है।

⇒ तत्सम में तत् → संस्कृत भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

जैसे = कृपशान्ति, प्रौद्योगिकी, दूरदर्शन, पुष्प, कृपा आदि।

तद्भव शब्द ⇒

→ जिन शब्दों की उत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें तद्भव कहते हैं।

→ वे शब्द जिनका मूलरूप संस्कृत से हिन्दी तक की हजारों वर्ष की यात्रा में घिस-पिटकर उनका अर्थ बदल दिया।

जैसे — आलस (आलस्य) — घर (गृह)
अक्षय (आख्य) — अक्षर

देशज शब्द →

किसी भाषा में प्रचलित वे शब्द, जो क्षेत्रीय जनता द्वारा आवश्यकतानुसार गढ़ लिए जाते हैं। जिनके स्त्रोत का पता नहीं होता जिनका स्त्रोत संस्कृत नहीं होता है। अर्थात जिनका संबंध संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भाषा-परिवार से हो। , ~~[illegible]~~ देशज देश में जन्मा कहलाता है।

उदाहरण ⇒ तेंदुआ, ठेठ, खिचड़ी, पगड़ी, डिबिया, लोटा, कटोरा, खटपट, खटिया, खर्राटा, पराठा, चुटकी, फटाफट, लुटिया, सटकना, सरपट, सरसों, जूता आदि।

विदेशी शब्द →

अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, अरबी, फारसी, तुर्की, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं के हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं।

अरबी भाषा ⇒ अदालत, अव्वल, असली, इमारत, इशारा, ऐनक, औसत, कदम, किताब, किराया, किस्मत, खिताब, गरीब, तरीका, दौरान, फसल, मदद, मसाला, मुकाबला, वकील, इत्यादि

फारसी भाषा ⇒ (हिन्दी जैसे होते है)

अनार, अमरूद, आइदा, आईना, आजादी, आतिशबाजी, आरजू, आमदनी, आसमान, इसबगोल, आसमाँ, ईरान, ईसवी, उम्मीद, उम्मीदवार, कसीदा, कारीगर, जुकाम, जख्म, जनाना, जमीन, जमीन, जुबान, जानवर, जलेबी, जागीर, जेब तंग, दीवाना, नाजुक दिवार, फरमाईश, बेवकूफी, रास्ता, राहगीर, लाजवाब, हुनर, होश, होशियार।

पुर्तगाली ⇒ अचार, आलपीन, आलमारी, आलू, आलपीन, इस्त्री, इस्पात, कमीज, काजू, गमला, गोभी, चाबी, तौलिया, नीलाम, पतलून, पपीता, पादरी, फीता, बाल्टी, संतरा, मेज, साबुन

अंग्रेजी ⇒ अपील, ऑफिसर, कोर्ट, टैक्स, डाक्टर, पेपर, पैन, वोट, स्कूल, फीस, पुलिस, नर्स